Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

License Information

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

JHN

यूहन्ना

यूहन्ना

यूहन्ना ने विश्वास को प्रेरित करने के लिए अपना सुसमाचार लिखा। यूहन्ना यीशु को घनिष्टता से जानता था, और यूहन्ना का सुसमाचार प्रभु के एक घनिष्ठता भरे चित्र को प्रस्तुत करता है। यूहन्ना स्वयं को "चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था" के रूप में बताता है। उसका सुसमाचार कलीसिया का "सबसे प्रिय सुसमाचार" बन गया है। यहाँ हम नीकुदेमुस, कुएँ पर सामरी स्त्री, लाज़र, और संदेह करने वाले थोमा से मिलते हैं। यूहन्ना ने हमारे लिए यीशु के अनेक यादगार कथन, सबसे लंबे उपदेश, और सबसे प्रसिद्ध आश्चर्यकर्म दर्ज किए हैं। यहाँ हम परमेश्वर से आमने-सामने मिलते हैं।

घटनास्थल

प्रथम शताब्दी ई. सन्.के अंत में मसीहियों का एक छोटा समुदाय प्राचीन इफिसुस में रहता था। उन्होंने प्रेरित पौलुस से यीशु का अद्भुत समाचार और उसके जीवन का वृतांत सुना था। अंततः, प्रेरित यूहन्ना इफिसुस चल गया और वहीं बस गया, जहां वह यीशु के जीवन और सेवकाई की स्मृतियों को अपने साथ लाया था। अपने अंत के वर्षों के समय में, यूहन्ना ने उन स्मृतियों को एक लिखित रूप, और अपने अनुयायियों—और हमें—चौथा सुसमाचार दिया।

यूहन्ना की सबसे बड़ी इच्छा उसके अनुयायियों के लिए यह थी कि वे यह विश्वास करें कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है (यूहन्ना 20:31)। उसने यह महसूस किया कि उन लोगों को उसके समान यीशु के अनेक चिन्ह और आश्चर्यकर्म देखने का सुअवसर नहीं मिला था (यूहन्ना 20:29)। यूहन्ना का अधिकार और यीशु के साथ उसका गहरा अनुभव उसके हर वृत्तान्त में दिखता है। यीशु के जीवन का एक गवाह होने कारण (यूहन्ना 19:35), यूहन्ना ने जीवन के वचन को सुना, देखा, और छुआ था (देखें 1यूह 1:1–4) और वह कई वृत्तान्तों का जो उसके सुसमाचार में अनूठे हैं, एक बहुमूल्य स्रोत था।

जैसे-जैसे इफिसुस के मसीहियों ने अपने संगी नागरिकों को यीशु के विषय में बताया, उन्होंने जल्द ही स्वयं को यहूदी आराधनालयों में रब्बियों के साथ यीशु के विषय में वाद-विवाद करते पाया। क्या यीशु सचमुच परमेश्वर का पुत्र था? वह मसीह कैसे हो सकता है? क्या मसीही वैध रूप से "अब्राहम की संतान' होने का दावा कर सकते हैं? क्या कोई भी यह साबित कर सकता है कि यीशु का परमेश्वर की ओर से भेजे जाने का दावा सत्य है? अपनी शिक्षाओं और लेखन में पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन से, यूहन्ना ने शानदार ढंग से अपने मसीही पाठकों को इन वाद-विवादों में निर्देशित किया।

तनाव बढ़ता गया। जैसे-जैसे यहूदी आराधनालयों के साथ-साथ छोटी कलीसियाएं बढ़ती गयीं, और अधिक यहूदी मन फिराते गए। मसीही विश्वासियों का विरोध होना अवश्य था। किन्तु उस भयानक सताव और संघर्ष के समय में यूहन्ना कलीसिया के साथ खड़ा रहा। जब ऐसा लगा कि इस संघर्ष में नवोदित कलीसिया पर प्रतिष्ठित यहूदी आराधनालय हावी हो जाएँगे, तब यूहन्ना ने बहुत साहस के साथ यीशु मसीह की सेवकाई की गवाही दी। जब झूठे उपदेशक बाद में कलीसिया में आंतरिक विवाद और झगड़ा लेकर आए, तब यूहन्ना ने पुनः उस समुदाय को सामर्थ प्रदान की। प्रोत्साहित करने और उभारने के लिए पत्रियाँ लिखते हुए (देखें 1, 2, और 3 यूहन्ना), यूहन्ना आसिया की कलीसियाओं का वीर रखवाला–ईश-वैज्ञानिक बन गया।

यूहन्ना के लेख आज भी उतने ही प्रिय हैं, जितने की वे कलीसिया के आरंभ के वर्षों में थे। बाइबिल की कुछ ही पुस्तकें यूहन्ना के गहन और क्रियाशील सुसमाचार के समान मसीही जीवन और विचारों को प्रभावित कर पाई हैं। आत्मीयता की अभिव्यक्ति को तीखी अंतर्दृष्टि के साथ संयोजित करके, यूहन्ना मसीह का एक प्रचुर और गहन चित्र प्रस्तुत करता है।

सार

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को दो मुख्य भागों में विभाजित किया है, जिनमें अध्याय 1–12 और अध्याय 13–21सम्मिलित हैं। पहला भाग, जिसे प्रायः "चिन्हों की पुस्तक" कहा जाता है, यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के विषय में बताता है जिसमें उसने स्वयं को यहूदी जगत के सामने किया। दूसरा भाग, जिसे प्रायः "महिमा की पुस्तक" कहा जाता है, अपने चेलों को कहे गए यीशु के निजी कथनों को दर्ज करता है तथा उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में बताता है।

अध्याय 1–12। सुसमाचार की प्रस्तावना (1:1–18) कलात्मक रूप से परमेश्वर के वचन के संसार में आने को

संक्षिप्त करती है। यीशु ने बपतिस्मा लिया और अपने शुरुआती अनुयायियों को बुलाया (1:19–51)। फिर अद्‌भुत घटनाओं की श्रृँखला (अध्याय 2–4) यीशु के स्वयं को यहूदियों पर प्रकट करने पर प्रकाश डालती है। काना के एक विवाह में, यीशु ने पानी को दाखरस में बदला। यरूशलेम में, उसने मंदिर से भ्रष्टाचार और सर्राफों को निकालने के लिए कोड़े का उपयोग किया। उसने नीकुदेमुस नामक एक रब्बी के साथ आत्मिक नए जन्म के अर्थ पर वाद किया। सामरिया के एक कुएँ पर, उसकी भेंट एक विचित्र वैवाहिक इतिहास रखने वाली स्त्री से हुई और उसने उसको ऐसा "जीवन का जल" देने को कहा, जो उसे कोई भी कूआँ नहीं दे सकता था, इन सभी घटनाओं में, यीशु ने अपनी पहचान प्रकट की।

अगले भाग (अध्यायों 5–10) में, यीशु कई यहूदी पर्वों में सम्मिलित हुआ, जहां उसने परमेश्वर के लोगों के सामने पुराने नियम के प्राचीन प्रतीकों और प्रथाओं के द्वारा स्वयं को प्रकट किया। सब्त के दिन, यीशु ने एक लँगड़े मनुष्य को चंगा करने का काम किया। फसह में, यीशु ने पाँच हजार लोगों के लिए रोटी उपलब्ध करायी। झोंपड़ियों के पर्व के प्रतीकात्मक प्रकाश में, यीशु ने जगत की ज्योति के रूप में स्वयं की पहचान को सुदृढ़ करते हुए, एक अंधे मनुष्य को चंगा किया। यूहन्ना का स्पष्ट संदेश यह है कि यीशु पुराने नियम के समय काल से यहूदी धर्म में दी गईं प्रतिज्ञाओं को पूरा करने आया था।

तब यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की तैयारी आरंभ कर दी। यूहन्ना यरूशलेम के ठीक पूर्व के एक नगर, बैतनिय्याह में यीशु के आगमन का वर्णन करता है (अध्याय 11)। उसके मित्र लाज़र की मृत्यु हो गई थी, और यीशु ने उसे जिलाया। इस अद्‌भुत घटना के बाद, यीशु ने संसार से उस पर और उसके उद्देश्य पर विश्वास करने का अंतिम सार्वजनिक निवेदन किया (अध्याय 12)।

अध्याय 13–21। यूहन्ना पाठकों को यह स्मरण कराते हुए कि क्रूस निराशा का प्रतीक नहीं बल्कि महिमा की तस्वीर है, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर फिरता है। यीशु अपने पिता के पास लौट रहा था, जिसके लिए उसे अपने चेलों को तैयार करने की आवश्यकता थी। अपने अंतिम फसह के भोजन के समय, यीशु ने अपने चेलों के साथ अपने दिल की सबसे करीबी बातें साझा कीं (अध्याय 13–17)। उसने खुल कर उन्हें अपनी मृत्यु और पिता के पास चले जाने के विषय में बताया। उसने उन्हें आश्वस्त किया कि वह उन्हें त्यागेगा नहीं, बल्कि लौटकर आएगा और उनके दु: ख को आनंद में बदल देगा। उसने उनसे पवित्र आत्मा के दान की प्रतिज्ञा की। अंत में, यीशु ने उनके लिए प्रार्थना की।

इस फसह के भोजन के बाद, यीशु अपने चेलों को शहर के पूर्व और घटी के पार गतसमनी नाम की एक जैतून की बारी में ले गया (अध्याय 18)। यहूदा, जो यीशु को पकड़वाने के लिए सहमत हो गया था, जल्द ही वहाँ रोमी सैन्य-दल और मंदिर के पहरेदारों के एक बड़े दल के साथ आ गया। अपने पकड़वाए जाने के बाद, यीशु पहले हन्ना और उसके बाद उस समय के महायाजक, कैफा के पास, यहूदी उच्च परिषद के सामने पूछताछ के लिए खड़ा हुआ। भोर के समय, यहूदी अगुवे यीशु को लेकर रोमी राज्यपाल, पुन्तियुस पिलातुस के पास ले गए, जिसने यीशु से उसकी पहचान के विषय में कड़ी जांच-पड़ताल की। पिलातुस ने, यहूदी अगुवों के दबाव में आकार, यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का फैसला किया (अध्याय 19)।

यूहन्ना के सुसमाचार की चरम सीमा यीशु का मरे हुओं में से जी उठना है (अध्याय 20)। यह घटना नाटकीय विवरणों की एक श्रृंखला आरंभ करती है, जिसमें यीशु अपने चेलों के सामने प्रकट हुआ और उन्हें प्रोत्साहित किया। उसने उन्हें पवित्र आत्मा दिया और संसार में अपना प्रतिनिधि होने के लिए नियुक्त किया। तब यीशु ने अपने चेलों को आगे बढ़ने के आदेश दिए (अध्याय 21)। उसने उन्हें अपनी सामर्थ पुनः स्मरण कराई (21:1–14); पतरस को, जिसने उसका इन्कार कर दिया था बहाल किया (21:15–17); और पतरस को अपनी सेवकाई में अपना अनुसरण करने की आज्ञा दी (21:18–19)।

लेखक एवं तिथि

अन्य सुसमाचारों के समान, यूहन्ना इसके लेखक के विषय में कोई प्रकट प्रमाण नहीं देता, हालाँकि "प्रिय शिष्य" का रहस्यमय चित्र स्पष्ट संकेत दे देता है (देखें 13:23; 19:26–27; 20:2–10; 21:7, 20–24)। यूहन्ना रचित सुसमाचार इस व्यक्ति से जुड़ा हुआ होना चाहिए, क्योंकि उसे यीशु के जीवन को दर्ज करने वाले प्रत्यक्षदर्शी स्रोत के रूप में पहचाना गया है (19:35; 21:20–24)।

यह प्रिय चेला कौन था? 125 ई. सन्. के आरंभ में, प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवों ने लिखा कि वह जब्दी का पुत्र, प्रेरित यूहन्ना था, जो यह सुसमाचार लिखेने के समय इफिसुस में रह रहा था (देखें, उदाहरण के लिए, यूसेबियुस, *कलीसिया का इतिहास* 3.23)। यूहन्ना बारह में से एक था और, याकूब (उसका भाई) और पतरस के साथ, यीशु के करीबी लोगों में से था (देखें उदाहरण के लिए, मत्ती 26:36–37; मत्ती 5:37; 9:2)। यूहन्ना रचित सुसमाचार इस घनिष्ठ दृष्टिकोण को दर्शाता है। कई विद्वानों का यह मानना है कि यूहन्ना ने अपना सुसमाचार लिखना 90 ई. सन्. के आसपास समाप्त किया।

प्रापक

यूहन्ना ने अपना सुसमाचार संभवतः इफिसुस, आसिया, और व्यापक भूमध्यसागरीय जगत में रह रहे यहूदी मसीहियों को लिखा। ये विश्वासी यहूदी और यूनानी संस्कृतियों के बीच फंसे हुए थे, और यहूदी धर्म की उनकी समझ घटने लगी थी।

अर्थ तथा संदेश

जबकि पलिश्तीनियों और यहूदी धर्म के विषय में यूहन्ना का ज्ञान उसके सम्पूर्ण सुसमाचार में प्रतिबिंबित है, उसका मानना था कि उसके पाठक यीशु से संबंधित कुछ विशिष्टताओं से अनजान हैं। उदाहरण के लिए, उसने व्याख्या की कि *रब्बी* एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ "हे गुरु" है (1:38), और उसने गलील की झील को भी एक वैकल्पिक नाम दिया (6:1)। साथ ही, यूहन्ना का यह मानना था कि उसके पाठक यहूदी प्रथाओं, अवधारणाओं, और पर्वों से परिचित थे। वे संभवतः मरकुस के सुसमाचार में प्रस्तुत मूल वृत्तान्त से भी परिचित थे। उदाहरण के लिए, यूहन्ना, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बंदीगृह में डाले जाने को संदर्भित करता है (3:24) उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त बताए बिना।

अर्थ तथा संदेश

प्रकटीकरण और छुटकारा। "ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया" (1:5)। परमेश्वर का प्रकाश जगत में निवास करता है: मसीह पिता को प्रदर्शित करता है (14:9)। मसीह में हम परमेश्वर की महिमा एक मनुष्य में देखते हैं। और यद्यपि यीशु को सताया गया, उस पर मुक़दमा चलाया गया, और उसे क्रूस पर चढ़ाया गया, तब भी ज्योति बुझाई नहीं जा सकी। परमेश्वर को प्रकट करने में यीशु का उद्देश्य लोगों को छुटकारा देना है: "वचन ने सारी सृष्टि को जीवन दिया, और उसका जीवन सब मनुष्यों की ज्योति था" (1:4)। जो भी विश्वास के साथ मसीह के प्रकटीकरण और छुटकारे को ग्रहण करेगा वह अनन्त जीवन पाएगा।

आराधना और आत्मा। आराधना, परमेश्वर के आत्मा द्वारा सक्रिय और निर्देशित होकर (4:24), "आत्मा और सच्चाई से" की जानी चाहिए। नीकुदेमुस को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए "जल और आत्मा" से जन्म लेना था (3:5)। गलील में, 5000 लोगों को खिलाने के बाद, यीशु ने भीड़ को बताया कि जीवन की रोटी, जिसे बलिदान किया जाना था, उसकी देह है। उसने उन्हें अपनी देह और लहू में सम्मिलित होने का निर्देश दिया, जो प्रभु भोज के प्रतीक हैं (6:51–59)। और जो आराधना परमेश्वर के आत्मा सहित न होकर केवल अलग-अलग तत्वों पर आधारित है, उसका कोई मोल नहीं है (देखें 6:63)।

यीशु मसीह। यूहन्ना ने यीशु के स्वभाव, उसके मूल, और पिता के साथ उसके संबंध का वर्णन किया है। यीशु ने पिता के साथ अपनी एकता (10:30; 14:9–10) और उनके उद्देश्य की एकता (5:17; 8:42), और साथ ही उनकी व्यक्तिगत विशिष्टताओं (14:28; 17:1–5) की पुष्टि की। यीशु ने उसी उपाधि का भी प्रयोग किया ("मैं हूँ") जिसका परमेश्वर ने पुराने नियम में स्वयं के लिए प्रयोग किया था, और उससे स्वयं के परमेश्वर होने की पुष्टि की (देखें 8:58; 18:4–5; निर्गमन 3:13–14)।

पवित्र आत्मा। यूहन्ना का सुसमाचार पवित्र आत्मा के कार्य को यीशु के मानवीय अनुभव (अध्याय 4, 7) और हमारे जीवन की (अध्याय 3, 14, और 16) एक केन्द्रीय विशेषता के रूप में रेखांकित करता है। परमेश्वर के आत्मा की परिवर्तित करने की शक्ति ही सच्चे शिष्य होने की कसौटी है।

कलीसिया का उद्देश्य। परमेश्वर ने यीशु को (8:18) अपनी महिमा की घोषणा तथा छुटकारे के सुसमाचार की गवाही देने के लिए संसार में भेजा। अपने लौट जाने के बाद, पुत्र ने इस सेवकाई को आत्मा के माध्यम से जारी रखा (16:5–11), जो उसके स्थान पर कलीसिया को भरेगा और विश्वासियों को संसार में यीशु की सेवकाई को पूरा करने की सामर्थ देगा (20:20–23; मत्ती 28:18–20; प्रेरितों के काम 1:7–8)।

अंत के समय। आरंभिक मसीही बड़ी उत्सुकता से यीशु के लौटने की प्रतीक्षा करते थे, और यूहन्ना इस प्रत्याशा की पुष्टि करता है। फिर भी इस बीच, विश्वासी मसीह की उपस्थिति को पवित्र आत्मा में अनुभव कर सकते हैं। यीशु द्वारा आत्मा के आगमन की घोषणा में उसके स्वयं के दूसरे आगमन की गूँज सुनाई देती है (14:15–26)। एक महत्वपूर्ण रूप से, जब हम इतिहास के अन्त में यीशु के व्यक्तिगत रीति से लौट कर आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, आत्मा में होकर यीशु पहले से ही हमारे साथ है।